शिवलिंग रूप बाबा का परिचय

वी.सी.डी. नं. 2305, सूरत मि.म. ऑडियो-2791 रात्रि क्लास - 04.11.66,

रात्रि क्लास चल रहा था- 04.11.1966। दूसरे पेज के मध्य में बात चल रही थी- बच्चों को सर्विस फील्ड में जाते समय टेपरिकॉर्डर ले जाना चाहिए, जो एक्यूरेट सुनाता है और उसमें फिर समझाना चाहिए कि भगवान बाप आया हुआ है। वो तो निराकार है, आत्माओं का बाप है और आत्मा तो निराकार होती ही है। निराकार आत्मा शरीर धारण किए बगैर कोई कार्य कैसे कर सकती है! तो मुख्य बात आती है कि वो निराकार सुप्रीम सोल कैसे किसी मुकर्रर रथ में प्रवेश करके अपने साकार सो निराकार स्वरूप का परिचय देता है, जिस साकार सो निराकार को गीता शास्त्र में 'अव्यक्त-मूर्ति' कहा है। मूर्ति माने साकार, अमूर्त माने जिसकी मूर्ति न हो- निराकार; लेकिन उन दोनों की प्रवृत्ति है- साकार मूर्ति और उसके साथ निराकारी स्टेज आत्मा की, जो सम्पन्न स्टेज कही जाती है। सम्पूर्णता की ही पूजा होती है; किंतु एक अपूर्ण पुरुषार्थी रूप की भी पूजा होती है। चित्र सम्पूर्ण के ही बनाए जाते हैं। तो जिस साकार में प्रवेश करता है, वो पहले तो अधूरा पुरुषार्थी ही है, निराकार सुप्रीम सोल की याद के संग के रंग से आखरीन बाप समान बन जाता है, तब भी उसकी मंदिरों में पूजा होती है, जो मंदिर सारी दुनिया में सार्वभौम हैं, शिवलिंग के रूप में जाने जाते हैं। शिव 'बिन्दी' का नाम है। उसका नाम 'सदाशिव' के रूप में जाना जाता है। सदा माने अविनाशी। ये विनाशी और अविनाशी का सवाल साकार दुनिया में पैदा होता है या निराकारी दुनिया में पैदा होता है? (किसी ने कहा- साकार दुनिया में) इसका मतलब है, वो निराकार सुप्रीम सोल शिव इस सृष्टि में जब किसी साकार मुकर्रर रथ में आता है, तो उस आत्मा को आप समान निराकार बनाता है। या तो यूँ कहें वो आत्मा अपने और बाप के स्वरूप को जान करके स्वयं अपने पुरुषार्थ से निराकारी स्टेज को धारण करती है; इसलिए सुप्रीम सोल बाप जिसे सुप्रीम टीचर और सद्गुरु भी कहा जाता है, वे कहते हैं कि बच्चे, मंदिरों में तुम्हारी पूजा होती है। न मैं पूजा करता हूँ और न पूजा लेता हूँ। तो चाहे 33 करोड़ देवताओं में से कोई आत्माएँ हों या तो देव-आत्माओं में महादेव हो। महादेव को भी दो रूपों में दिखाया जाता है। एक है पुरुषार्थी रूप, जो प्रायः याद में बैठा हुआ दिखाया जाता है। याद में रहने वाले को अपूर्ण कहेंगे या सम्पूर्ण कहेंगे? अपूर्ण है तो अपने से किसी ऊँचे की स्मृति में रहता है; सम्पूर्ण बनने के बाद याद करने की ज़रूरत नहीं है। उसने निरंतर निराकारी स्टेज धारण कर ली, शिव समान बन गया तो उसके शरीर को भी और उसकी आत्मा को भी नाम दिया जाता है- शिवलिंग। शिव अर्थात् कल्याणकारी, कोई भी हालत में कल्याणकारी, कोई भी व्यक्तित्व मात्र के लिए कल्याणकारी, अकल्याण का सवाल ही पैदा नहीं होता। विश्व-कल्याणकारी बाप निराकार शिव की आत्मा सिर्फ़ आ करके निराकार ज्ञान का

निराकारी वर्सा देती है; इसलिए पूछते हैं- निराकार से क्या निराकारी वर्सा चाहिए? क्या हुआ निराकारी वर्सा? ज्ञान ही निराकारी है। वो सुप्रीम सोल बाप जो जन्म-मरण के चक्र से न्यारा है, वो है क्या चीज़? अखूट ज्ञान का भण्डार है और इस सृष्टि पर आता है तो ज्ञान का वर्सा ही देता है। ज्ञान माने जानकारी, सच्चाई को ही जानकारी कहा जाता है। सत्य को ही भगवान कहा जाता है। कहते भी हैं- गॉड इज़ ट्रूथ, ट्रूथ इज़ गॉड। वो इस सृष्टि के आदि-मध्य-अंत की जानकारी देता है, आत्माओं को अपनी-2 जानकारी देता है, जो जानकारी उस निराकार आत्माओं के बाप निराकार शिव के वर्से के रूप में गाई जाती है। जिस ज्ञान के वर्से को नम्बरवार पात्रधारी आत्माएँ छोटे-बड़े पात्र के अनुसार धारण करती हैं। कोई छोटा पात्र, कोई बड़ा पात्र, मनुष्य-आत्माओं के बीच में 500/700 करोड़ पात्रधारी। इस सृष्टि में महामृत्यु के समय तक सभी मनुष्य-आत्माएँ नम्बरवार उस सत्य को जानकर सत्य की जानकारी को धारण करती हैं और धारण तभी कर पाती हैं जब वो, निराकार सुप्रीम सोल शिव और मनुष्य-सृष्टि के बाप को पहचान लेती हैं, जो साकार/मूर्ति/देवात्मा शिव का स्वरूप धारण कर लेता है, सम्पूर्ण ज्ञान को धारण कर लेता है; इसलिए उस साकार माध्यम और निराकार शिव समान, दोनों की प्रवृत्ति को गाया और पूजा जाता है। याद भी प्रवृत्ति की है। जिस शिवलिंग की याद में निराकार भी है और साकार भी है, दोनों की प्रवृत्ति समाई हुई है; इसीलिए नाम पड़ता है 'शिवलिंग'; क्योंकि बाप अपने पूरे परिवार का कल्याणकारी होता है। यह बेहद का मनुष्य-सृष्टि का बाप भी है, जब अपने स्वरूप को सम्पूर्ण पहचान लेता है तो सारी मनुष्य-सृष्टि का कल्याणकारी है। उस कल्याणकारी बाप को पहचानना/जानना, इस मनुष्य-सृष्टि के हर मनुष्य के लिए अनिवार्य है। नहीं पहचानेगा तो महामृत्यु के समय निराकार आत्माओं के धाम में भी नहीं जा सकेगा; इसीलिए भगवान बाप ने मनुष्य-सृष्टि के झाड़ के ऊपर जो साकारी चित्र बैठाया हुआ है शंकर के रूप में, वो यह साबित करता है- इस मनुष्य-सृष्टि की सभी आत्माएँ महामृत्यु के समय उस एक साकार सो निराकार की याद में अपने-2 शरीर को छोड़ती हुई आत्मलोक में वापिस जाती हैं। उन सभी आत्माओं को खींचने वाला अव्वल नम्बर एक ही है, जिसका नाम शास्त्रों में 'कृष्ण' दे दिया है। कृष्ण का अर्थ ही है- आकर्षित करने वाला। संपन्न आत्मा बन करके आत्माओं को आकर्षित करता है। तो बताया, उस एक शिवलिंग बाप का परिचय देना चाहिए। जब तक पूरा परिचय नहीं दिया है या पूरा परिचय नहीं मिला है तब तक एवरलास्टिंग निश्चयबुद्धि नहीं बन सकते; आज निश्चयबुद्धि बनेंगे, कल अनिश्चयबुद्धि बन जाते। उस साकार सो निराकार स्वरूप को ही गीता में अव्यक्त-मूर्ति के रूप में जाना जाता है, वो लिंग मूर्ति है, सुप्रीम सोल शिव का बड़ा आकार तो है; लेकिन निराकारी स्टेज में टिका हुआ है तो निराकार भी है और साकार भी है। निराकार इसलिए कि उसे, उस लिंग रूप की स्थिति में अपनी इन्द्रियों का भान नहीं

रहता है, आत्मा का भान रहता है, आत्मिक स्टेज का भान रहता है अर्थात् इन्द्रियों से अनुभव करते हुए भी नहीं करता, देखते हुए भी नहीं देखता। कान हैं; लेकिन कानों से सुनते हुए भी नहीं सुनता, जैसे कान हैं ही नहीं, आँखें हैं ही नहीं; इसलिए 'अव्यक्त-मूर्ति' कहा जाता है।

इसलिए बाप बताते हैं- इस संगमयुग में इस बाप के द्वारा अपना वर्सा ले लो, मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा ले लो। वो सुप्रीम सोल बाप कहते हैं- मैं तो जीवनमुक्त नहीं बनता हूँ; तुम बच्चे ही जीवन में रहते हुए दुख-दर्दों से मुक्त बनते हो। डॉक्टर ही डॉक्टर बना सकता है, इंजीनियर ही इंजीनियर बनाय सकता है। तो जिसकी 100 परसेण्ट जीवनमुक्ति हो उसके द्वारा ही जीवनमुक्ति पद पाया जा सकता है। नं.वार मुक्ति-जीवनमुक्ति की पढ़ाई है। जो स्वयं मुक्त और जीवनमुक्त नहीं बना है, वो दूसरों को नहीं बनाय सकता; इसलिए बाप कहते हैं कि मेरे को याद करो, घर को याद करो और स्वर्ग को याद करो। "अपने शांतिधाम घर को याद करो, सुखधाम को याद करो। .... सिर्फ एक बाप को याद करना है।" (मु.ता. 15.7.66 पृ.3 आदि) कभी कहते- एक को याद करो, मेरा तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई। तो एक को याद करें या तीन-2 को याद करें? दो बातें हो जाती हैं ना! नहीं होतीं? अरे, भगवान बाप ऐसे दो-दो बातें कैसे बोल सकता है? ये तो द्वैतवादी दुनिया के द्वापर-कलियुगी मनुष्य दो बातें करेंगे। भगवान तो एक है, एक ही बात करता है। देव-आत्मा बच्चों को इशारा देता है- यही तुम्हारा बाप है, मनुष्य-सृष्टि का बाप ही तुम्हारा वर्सा है और यही आत्माओं का घर है, 5-700 करोड़ आत्माओं का बाप प्रजापिता है।

बच्चे कहाँ से निकलते हैं? कहते हैं बच्चे माँ से पैदा होते हैं; लेकिन माँ भी गर्भ कहाँ से धारण करती है? बच्चे का गर्भ धारण किया ना! तो आख़रीन वो बच्चा कहाँ से आया? माँ से आया या बाप से आया? बाप से आया। ऐसे ही यह मनुष्य-सृष्टि का बेहद का बाप है, जहाँ से इस सारी जड़-जंगम सृष्टि का निर्माण होता है। वो सदा इस सृष्टि पर कायम है और एक ही सदा कायम है, एक ही सत्य है; सत्य कोई दो/चार नहीं होते और 100 परसेण्ट सत्य है तो ही सत्य है, थोड़ा भी मिक्स है परसेण्टेज में तो सत्य कहें या असत्य कहें? भरे हुए दूध के घड़े में एक बूँद सर्प का विष मिला दो तो सारा क्या हो जावेगा? (किसी ने कहा- वो भी विष ही हो जावेगा) तो जो सदाकाल सत्य है, इस सृष्टि पर भी सदाकाल सत्य है, वो कोई आत्माओं के बाप शिव की बात नहीं है; क्योंकि वो शिव इस सृष्टि पर सदाकाल काबिज़ ही नहीं रहता, वो तो 5 हज़ार वर्ष के लिए आत्मलोक का वासी हो जाता है; लेकिन यह जो सृष्टि है, जहाँ सृजन का कार्य चलता ही रहता है, वो सृजन का कार्य एक से चलता है या दो चाहिए? एक से सृजन होगा क्या? (किसी ने कहा- नहीं होता) तो मनीषियों का कहना है- सृजन-कार्य के लिए मूल रूप में दो हैं शक्तियाँ- एक चैतन्य शक्ति, एक जड़त्वमयी शक्ति। जड़त्वमयी शक्ति को प्रकृति कहते हैं। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश का

संघात 'प्रकृति' कही जाती है। वो प्रकृति, माता का रूप है और प्रकृति का पति, पिता का रूप है- आत्मा पुरुष। तो यह सारी सृष्टि प्रकृति और पुरुष का खेल है; परन्तु मनुष्य-सृष्टि का बाप पुरुष तो है; परन्तु परम पुरुष नहीं है। परम पुरुष कौन है? परम पुरुष वो है जो सब आत्माओं का बाप है, मनुष्य-सृष्टि के बाप का भी बाप है; परन्तु उस सुप्रीम सोल शिव का बाप कोई नहीं। वो परम पुरुष और वो लिंग रूप जड़ शरीर रूपी रथ परा शक्ति, जिसे परा प्रकृति कहा जाता है, दोनों का मेल होता है तब इस सृष्टि का सृजन का कार्य आरम्भ होता है। उन दोनों में एक है- पुरुष, जिसे परम पुरुष कहा जाता है, सुप्रीम सोल शिव स्प्रिचुअल गॉडफादर। वो जब इस सृष्टि पर आता है तो परा शक्ति को चुनता है। कौन है वो परा शक्ति? वो पहली-2 माता कौन है? (किसी ने कहा- प्रजापिता) नहीं, परमब्रह्म। मैं जिसमें प्रवेश करता हूँ उसका नाम 'ब्रह्मा' रखता हूँ और ब्रह्मा नामधारी तो बहुत हैं। तो उनमें जो अव्वल नम्बर है, वही अव्वल नम्बर पाँच तत्वों का पुतला है, जो पुतला परा शक्ति का रूप है, पंचतत्वों का बीज या अण्डरूप संघात है मूल रूप में; परन्तु उस समूल बीज पंचतत्वों से बने हुए शरीर को चलाने वाला पहले-2 अज्ञानी आत्मा है या सम्पूर्ण ज्ञानी आत्मा है? सुप्रीम सोल शिव निराकार गॉडफादर के आने से पहले वो सम्पूर्ण अज्ञानी अर्थात् अज्ञानियों का भी बीज-बाप है या सम्पूर्ण ज्ञानी है? उस शरीर को चलाने वाला रथी सम्पूर्ण अज्ञानी बन जाता है। भल इस सृष्टि पर सदा कायम है, तो भी जन्म-मरण के चक्र में आने के कारण अज्ञानी बन जाता है। अज्ञानी का अर्थ ही है- पत्थरबुद्धि; इसीलिए उस लिंग को स्वर्ण लिंग, रजत लिंग, ताम्र लिंग और लौह लिंग- इन रूपों में गाया और पूजा जाता रहा है। वो बड़े-ते-बड़ा मूल्यवान मैटल भी बनता है अर्थात् हीरा भी बनता है। जिस हीरे की पूजा द्वापरयुग के आदिकाल में राजा विक्रमादित्य के द्वारा सोमनाथ मंदिर में हुई थी। पत्थरबुद्धि हीरा भी था और वो निराकार शिव का बड़ा रूप लिंग भी था। सुप्रीम सोल नौ रत्नों की तरह कभी पत्थर बनता है? नौ रत्न पत्थर होते हैं या नहीं होते हैं? (किसी ने कहा-हाँ) शिव कभी पत्थर नहीं है, वो तो सदा जागती-ज्योति है। वो जागती-ज्योति प्रकृति के अव्वल नम्बर पुतले में प्रवेश करती है, उस मुकर्रर रथ में प्रवेश करती है। तो अपना परिचय दे करके उसे आप समान 'निराकारी-निर्विकारी-निरंहकारी' ज्योतिबिन्दु भी बनाती है।

आत्माओं के बीच में शिव बाप का बड़ा बच्चा शिव बाप समान बन जाता है, बाप की तरह दुकान या कारखाने को संभालने योग्य बन जाता है, तो बाप वानप्रस्थी हो जाता है। यह परम्परा सृष्टि में चलती रहती है; इसीलिए गीता में लिखा है- ''मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः॥'' (गीता 3/23) जितने भी मनुष्यमात्र हैं, मेरे रास्ते का ही अनुगमन करते हैं। ये जो वानप्रस्थ होने की परम्परा चली है, इस परम्परा की शुरुआत किसने की? शिव बाप ने की। कौन-से बाप ने की?

(किसी ने कहा- शिव बाप ने) शिव बाप निराकार ने की या मनुष्य-सृष्टि के बाप ने पुरुषार्थ सम्पन्न होने पर इस परम्परा की शुरुआत की? किसने शुरुआत की? जब मनुष्य-सृष्टि का बाप शिव समान बन जाता है, तो शिव में और उस मनुष्य-सृष्टि के बाप में कोई अंतर रहता है? अंतर है। सुप्रीम सोल बाप शिव अर्थात् आत्माओं का बाप और मनुष्यों के बाप में सम्पन्न होने के बाद भी अंतर है। क्या अंतर है? एक अकर्ता है और दूसरा कर्ता है; एक अजन्मा है और दूसरा जन्म-मरण के चक्र में आने वाला है। हाँ, संगमयुग में जैसे सुप्रीम सोल बाप अखूट है, उसकी शक्ति कभी क्षीण होती ही नहीं, ऐसे ही जिसमें मुकर्रर रूप से प्रवेश करता है, वो भी सम्पन्न होने पर सर्वशक्तियों में अखूट बन जाता है; भले कितना भी और कितनों के भी संग के रंग में आवे। इब्राहीम-बुद्ध-क्राइस्ट-गुरुनानक आदि धर्मपिताओं की तरह अपने फॉलाअर्स के बीच क्षीण नहीं होता, सम्पूर्ण हो गया ना! जिसके लिए गायन है- ‘‘पूर्णमिदं पूर्णमदः पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥’’ उसमें से पूरा ही निकाल लो तो भी पूरी शक्ति बचती है। तो क्या अंतर हुआ? वो ऊँच-ते-ऊँच बाप, बापों का बाप, सभी आत्माओं का बाप कैसा है? कुछ अंतर है या नहीं है? मनुष्य-सृष्टि का बाप जब सम्पूर्ण बनता है तो सुप्रीम सोल बाप से कुछ अंतर रखता है या नहीं रखता है? संगम में कोई अंतर नहीं और संगम के बाद, शूटिंग पीरियड के बाद जब ब्रॉड ड्रामा शुरू होता है तो अंतर पड़ जाता है; क्योंकि एक है मनुष्यात्मा, भले देवता बनकर श्रेष्ठ मनुष्य बन जाती है; और सुप्रीम सोल क्या है? बताया- न मैं देवता बनता हूँ, न मैं मनुष्य बनता हूँ, न मैं राक्षस बनता हूँ, मैं कोई गिनती में नहीं आता। जो गिनती में आए वो ड्रामा के चक्र में भी आए। “गिनती में तो वो ही आते हैं, जो कि चक्र में आते हैं।” (मु.ता. 8.12.67 पृ.1 मध्यांत) तो वो सुप्रीम सोल चक्र से न्यारा है। जो इस सृष्टि रूपी चक्र से न्यारा है वो स्वदर्शन-चक्र घुमाने वाला है या नहीं है? नहीं है। उसे अपने 84 जन्मों के चक्र को स्मरण में लाने की दरकार नहीं। वो तो है ही असोचता, उसको सोच-विचार करने की दरकार है ही नहीं। तो कौन हुआ स्वदर्शन-चक्रधारी? जो पूरे 84 जन्म लेने वाला है, इस सृष्टि पर सदा कायम है, वो ही स्वदर्शन-चक्रधारी विष्णु परमपद पाने वाला है और उसकी पहचान भी बताई। क्या पहचान बताई? कहाँ आराम से लेटा हुआ है? (किसी ने कहा- शेष शैय्या पर) विषैले सर्पों की, ह्युमन सर्प-सर्पिणियों की शैय्या पर लेटा हुआ है। जिसके लिए गाते हैं- “चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहें भुजंग।” जैसे चंदन का पेड़ होता है, उस पर विषैले सर्प लिपटे रहते हैं; परन्तु चंदन अपनी सुगन्ध को नहीं त्यागता। ऐसे ही उसका गायन होता है पारसनाथ के रूप में। पारसनाथ, स्पर्शनाथ का बिगड़ा हुआ रूप है। उसके स्पर्श से परिवर्तन होता है, वो किसी के स्पर्श से परिवर्तन को नहीं पाता, वो किसी के संग के रंग से प्रभावित नहीं होता है, उसके संग के रंग से सब प्राणि-मात्र प्रभावित होते हैं और प्रभावित माने प्रजा। तो सुप्रीम

सोल शिव की सभी मनुष्य-आत्माएँ प्रजा हैं और फिर जो भी मनुष्य-आत्माएँ हैं, उनमें बड़ा भाई कौन? कोई बड़ा भाई है या नहीं है? कौन? (किसी ने कहा- प्रजापिता) तो बड़े भाई को बाप समान कहा जाता है। कारणे-अकारणे अगर बाप नहीं है या नहीं रहता है तो सारा परिवार किसके आधार पर चलता है? बड़े भाई के आधार पर चलता है। ये भी सृष्टि में परम्परा भगवान से चली है। भगवान ने ही आ करके यह परम्परा डाली है जो द्वापर-कलियुग की 2500 वर्ष की हिस्ट्री में यह परम्परा राजाओं में चलती ही रही कि राजाओं ने अपने बड़े बच्चे को ही राजाई दी है, छोटे बच्चों को राजाई नहीं दी। क्यों नहीं दी? कोई कारण होगा ना! (किसी ने कहा- प्योरिटी की पावर) हाँ, जो बड़ा बच्चा होता है वो मात-पिता के लम्बे समय की प्योरिटी की पावर को धारण करता है। प्योरिटी की पावर ही सत् है, सत्व है, सतीत्व है। जिन सती नारियों की आज तक भी पूजा होती है। उन सतियों के आधार पर सारा कार्य चलता है। दुनिया के सारे कार्य किस आधार पर होते हैं? पवित्रता के आधार पर होते हैं। और वो पवित्रता की पावर को धारण करने वाली कौन है? (किसी ने कहा- लक्ष्मी) धारण करने वाली को ही धरणी कहा जाता है। धरणी माने? धारण करने वाली। क्या धारण करने वाली? सत्व को धारण करने वाली। जैसे मनुष्य के शरीर में सत्व होता है- वीर्य, उस वीर्य को धारण करने वाली। वो सच्चाई से धारण करती है तो सती कही जाती। इसलिए भगवान इस सृष्टि पर आते हैं तो सत्य को धारण करने वाली, पवित्रता की शक्ति को धारण करने वाली धरणी रूपी कन्याओं-माताओं को ही आगे करते हैं। जिन कन्याओं-माताओं को द्वैतवादी युग में पीछे ढकेल दिया गया, भगवान बाप आ करके उन्हें लकब देते हैं कि तुम ही स्वर्ग का गेट खोलने वाली हो, स्वर्ग बनाना वो तुम्हारे आधार पर है। यह परम्परा भी कहाँ से चली? किसने शुरुआत की? अरे! नहीं बताने वाली बात है? अरे! शिव बाप आता है तो किसको चुनता है? माता को चुनता है। कौन हुई पहली माता? (किसी ने कहा- परमब्रह्म) तो परमब्रह्म ने वो सत् की शक्ति को पहले-2 धारण किया। अव्वल नम्बर इस सृष्टि पर वो सत् है, जिस सत् का कभी विनाश नहीं होता है। गीता में लिखा हुआ है- “नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।”(गीता 2/16) सत्य का कभी अभाव होता ही नहीं; सत्य सदैव कायम रहता है।

तो बाप कहते हैं- टेपरिकॉर्डर एक्यूरेट ज्ञान सुनाएगा; लेकिन जो एक्यूरेसी है, अगर जिज्ञासु को समझ में नहीं आती है, तो तुम क्या सेवा करो? पहली-2 सेवा क्या करो? बाप का परिचय दो। क्या तथाकथित ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ बाप का परिचय नहीं देती हैं? देती तो हैं; लेकिन अधूरा परिचय देती हैं, बेसिकली परिचय देती हैं या गहराई से सम्पूर्ण परिचय देती हैं? परिचय तो देती हैं- तुम आत्मा हो, तुम आत्माओं का बाप ‘परमपिता परमात्मा’ है। तुम भी बिन्दी हो, वो भी बिन्दु है। अंतर यह है कि हम सब जन्म-मरण के चक्र में आने वाले हैं, वो सुप्रीम फादर शिव जन्म-मरण के

चक्र में आने वाला नहीं है। तो परिचय पूरा हो गया? क्यों, परिचय पूरा क्यों नहीं हुआ? (किसी ने कहा-मनुष्य-सृष्टि के बाप का पता है क्या!) हाँ, इसलिए परिचय पूरा नहीं हुआ कि जो परिचय दिया है, वो बहुकाल निवृत्ति वाली आत्मा का परिचय दिया है या प्रवृत्ति का परिचय दिया? (किसी ने कहा- निवृत्ति का) एक आत्मा का परिचय दिया, परमपुरुष का परिचय दिया; लेकिन वो परमपुरुष जब तक परा शक्ति का आधार न ले, तब तक इस सृष्टि का, नई सृष्टि का सृजन हो ही नहीं सकता। वो नई सृष्टि का सृजन करने के लिए परा शक्ति का आधार लेता है और वो परा शक्ति है ही 'परमब्रह्म'। ब्रह्मा तभी कहा जाता है जब उसमें परमपुरुष विराजमान हो। परमपुरुष विराजमान नहीं है तो वो उस पुरुष का घर है? पुरुष कहाँ रहता है? घर में रहता है। तो वो घर भी है, उसमें बाप भी है और वो सदा सत् होने के कारण सुखदायी है या दुखदायी है ? सदा सत् है सो सदा सुखदायी है। तो स्वर्ग हुआ या नहीं हुआ? बाप की गोद में बच्चा है तो कहाँ है- सुख में है या दुख में है? सुख में है। हरेक बाप अपने बच्चे का कल्याण-ही-कल्याण चाहता है। तो बाप कहते हैं- सिर्फ़ निराकार का परिचय देंगे, तो इस्लामी-बौद्धी-क्रिश्चियन्स बन पड़ेंगे और जो इस्लामी-बौद्धी-क्रिश्चियन्स बनेंगे वो दूसरों को भी क्या बनाएँगे ? इस्लामी-बौद्धी-क्रिश्चियन, निराकार को मानने वाला बनाएँगे और जो निराकार उपासी हैं, निवृत्ति के उपासी हैं, सिर्फ़ गॉडफादर को मानने वाले हैं, वो कभी भी प्रवृत्तिमार्ग के सम्पूर्ण देवताओं की दुनिया में नहीं जा सकते; इसलिए क्या करना है? पहले अपने प्रवृत्तिमार्ग वाले अव्वल नम्बर बाप को पहचानना है और इसी सृष्टि पर पहचानना है। इस सृष्टि पर उसका पूरा आई.डी. प्रूफ़ लेना है, नाम-रूप-गुण-धाम-कर्तव्य सारी जानकारी होना चाहिए। बाप का ज्ञान हुआ, बाप को पहचाना माना बाप के वर्से को ले लिया। बाप का वर्सा है- मुक्ति-जीवनमुक्ति। मुक्ति है सामान्य वर्सा और विशेष वर्सा क्या है? जीवनमुक्ति, जो सभी मनुष्य-आत्माओं को अनेक जन्मों के लिए प्राप्त नहीं होती। ये सिर्फ़ हम 84 जन्म लेने वाले अविनाशी बीज-रूप बच्चे हैं जो अनेक जन्मों की जीवनमुक्ति प्राप्त करते हैं- जीवन में भी रहते हैं और कम-से-कम 21 जन्म दुख-दर्दों से मुक्त भी रहते हैं।

तो उस स्वरूप को पहचानना चाहिए जिसके द्वारा उस सत्/सत्य सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है। स्थापना करने वाला धर्मपिता होगा तो धर्म का नाम पड़ेगा। बुद्ध धर्म है तो पिता भी है, क्रिश्चियन धर्म है तो पिता भी हुआ माना धर्मपिता के नाम पर धर्म का नाम पड़ता है। हमारा धर्म क्या है? आदि सनातन देवी-देवता धर्म। सनातन है तो सत्य भी है। सनातन माने पुराने-ते-पुराना, जिससे पुराना और कोई धर्म होता ही नहीं। धर्म भी पुराना है, सत्य धर्म है और भारत धर्मखण्ड भी पुराना है। धर्म भी अविनाशी है और धर्मखण्ड भी अविनाशी है। तो धर्मपिता कैसा होगा? (किसी ने कहा- अविनाशी है) धर्मपिता इस सृष्टि पर सदा कायम होगा या कभी

होगा/कभी नहीं होगा? सदा कायम होता। अन्य सभी धर्म विनाशी हैं, धर्मखण्ड भी विनाशी हैं। योरोप है, अमेरिका है, ऑस्ट्रेलिया है, एशिया है- 2500 वर्ष पहले ये भी समुद्र के गर्त में समाए हुए थे, थे ही नहीं, अभी फिर चतुर्थ विश्वयुद्ध में ऐटमिक विस्फोट होंगे और ये फिर समुद्र के तल में समा जाएँगे। फिर भारत खण्ड ही अविनाशी बचेगा। तो उस धर्म का धर्मपिता जो सदाकाल था, सदाकाल है, सदाकाल रहेगा। सिक्ख लोग भी गाते हैं- "होसी भी सत्, हैसी भी सत्।" तीनों कालों में सत् है। वो सत् को पहचानना है। पहले स्वयं पहचानना है, फिर दूसरों को परिचय देना है और परिचय देने का माध्यम क्या बताया? अपनी तिक-2 कम सुनानी है और सुप्रीम सोल बाप ने ब्रह्मा के द्वारा जो सुनाया है वो एक्यूरेट सुनाना है। किस माध्यम से? टेप के माध्यम से। अभी टेप तो बंद हो गए, अब क्या करेंगे? अरे, वीडियो है, वी.सी.डी. है, डी.वी.डी. है या नहीं है? छोटे रूप में भी है, हाथ में लेकर किसी और एक को समझा सकते हैं। तो बताया, यही बात इस वाणी में और पिछले कई दिनों से ये वाणी में बता रहे हैं कि बच्चे ढेर सारी तिक-2 ज्ञान की करते रहते हैं; लेकिन जिसका परिचय देना है वो परिचय नहीं दे पाते, जिसके ऊपर विश्वास बैठाना है वो विश्वास, वो निश्चय नहीं बिठा पाते; इसलिए खुद भी हिलते रहते हैं और जिनकी सेवा करते हैं वो भी हिलते रहते हैं।

तो बाप कहते हैं- अभी ये बाप का वर्सा, स्वर्ग का वर्सा, बाप के घर का वर्सा, जो कहते हैं- बाप को याद करो, घर को याद करो, स्वर्ग को याद करो- यह तीनों एक ही साकारी सो निराकारी रूप में हैं और प्रैक्टिकल जीवन में हैं। यह वर्सा हम ले रहे हैं। मौत सामने खड़ा है। ऐसे क्यों कहा? राजा परीक्षित की कहानी आती है, उनको बताया गया- सात दिन के अंदर तुम्हारी मौत निश्चित है। तो क्या किया? कुछ किया या नहीं किया? जैसे सामान्य जीवन में चलते थे वैसे ही चलते रहे या पुरुषार्थ में मोड़ लाया? (किसी ने कहा- पुरुषार्थ में मोड़ लाया) तीव्र पुरुषार्थ कर दिया। तो बताया- मौत सामने है। वो बेहद का वर्सा लेना है तो अभी लेना है; नहीं तो मौत हो जाएगा; और मौत तो सारी दुनिया का होना है कि किसी का होना है/किसी का नहीं होना है? (किसी ने कहा- सारी दुनिया का होना है) सारी दुनिया की महामृत्यु होनी है, तो फिर चिता किस बात की! जब सारी दुनिया का मौत होना ही है तो फिर डर क्यों दिखाए रहे हैं? मौत तो होना है; लेकिन बाप तुमको जीते जी मरना सिखाते हैं। यह जीवन रहे, यह शरीर रहे, शारीरिक मौत तुमको नहीं मरना है। देहभान की मौत से मरना है, देहभान को त्यागना है, आत्मिक स्टेज धारण करनी है। अगर ऐसी बेहद की मौत नहीं मरे और अभी से पुरुषार्थ नहीं किया, तो पीछे कुछ भी नहीं मिलेगा। कुछ भी नहीं मिलेगा? द्वापर-कलियुग में जो आत्माएँ आकर जन्म लेती हैं, पहला-2 जन्म लेती हैं, उनको कुछ भी नहीं मिलता? अरे, एक जन्म की जीवनमुक्ति मिलती है या नहीं मिलती है?

(किसी ने कहा- मिलती है) तो ऐसे क्यों कहा कि कुछ भी नहीं मिलेगा ? माना जो बाप का दिया हुआ डायरैक्ट वर्सा है- जीवनमुक्ति। बाप से जो सन्मुख पढ़ते हैं, वो सन्मुख पढ़ाई का वर्सा- जीवनमुक्ति 21 जन्मों की नहीं मिलेगी, कुछ भी नहीं मिलेगी। पीछे जभी भी जन्म होगा तो तुम्हारा जन्म रावण-राज्य में होगा, राम-राज्य में तो जन्म होगा ही नहीं। तो अब क्विक पुरुषार्थ चाहिए। ऐसा न हो कि टू लेट हो जावें। टू लेट का क्या मतलब? अरे, टू लेट का बोर्ड तो सन् 76 के लिए भी घोषित किया था। बोला था ना कि 10 वर्ष में पुरानी दुनिया का विनाश, नई दुनिया की स्थापना हो जावेगी, फिर टू लेट का बोर्ड लग जावेगा। तो बार-2 टू लेट का बोर्ड लगने की क्या दरकार? दरकार है। पहले-2 बताया- टू लेट का मतलब तुम सब ब्राह्मणों के जीवन का लक्ष्य है- नर से नारायण बनना और नारी से लक्ष्मी बनना। वो लक्ष्य प्राप्त करने वाला नर से नारायण बनने वाला अव्वल नम्बर, नारी से लक्ष्मी बनने वाला अव्वल नम्बर पुरुषार्थी जोड़ा सन् 76 में प्रत्यक्ष हो गया, प्रत्यक्षता रूपी जन्म ले गया। तो एक जोड़े को छोड़ करके बाकी सबके लिए टू लेट का बोर्ड लग गया। अब क्या होगा? एक के बाद जो और भी नं०वार श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ माने जाते हैं वो कौन? अष्टदेव। उनके लिए बताया कि तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40 से 50 वर्ष लगते हैं। "तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40-50 वर्ष लगते हैं।" (मु.ता. 6.10.74 पृ.2 अंत) तो आठ का प्रत्यक्षता रूपी जन्म भी होगा। जिन आठ को शिव की अष्ट-मूर्तियाँ कहा जाता है, उन अष्ट-मूर्तियों की पूजा और यादगार मंदिर कहाँ बने हुए हैं? दक्षिण भारत में। नॉर्थ इण्डिया में क्यों नहीं? कोई कारण होगा कि बिना कारण के कोई कार्य होता है? कारण है। वो आठों ही मूर्तियाँ चार मुख्य दिशाओं और उनके चार मुख्य कोण अर्थात् आठ दिशाओं के पालने वाले आठ दिग्पाल हैं, जो इस मनुष्य-सृष्टि में कोई-न-कोई एक आस्तिक धर्म के पूर्वज हैं। पूर्वज माने? 'पूर्व' माने पहले-2, 'ज' माने प्रत्यक्षता रूपी जन्म लेने वाले। आठों ही धर्मों में जिन आत्माओं ने पहले-2 जन्म लिया, उनसे पहले और कोई मनुष्यमात्र ने जन्म उस धर्म में लिया ही नहीं। वो आठों मूर्तियाँ, जो दक्षिण भारत का विदेश माना जाता है, वहाँ उनके यादगार मंदिर बने हुए हैं। तो किन्होंने पहले पहचाना होगा? नॉर्थ इण्डिया वालों ने पहले पहचाना होगा या साउथ इण्डिया वालों ने पहले पहचाना होगा? (सभी ने कहा- साउथ...) विदेशियों ने पहले पहचाना, भारतवासियों ने बाद में पहचाना; इसलिए जिन्होंने पहले पहचाना उन्होंने मूर्तियाँ बना दीं, अष्ट देवताओं के मंदिर बना दिए, जिनकी अभी प्रत्यक्षता होने वाली है, जिनको भगवान से, भगवान बाप से पूरी प्राप्ति होती है। तो बाप कौन-सा लक्ष्य देते हैं? पूरा लक्ष्य देते हैं या अधूरा लक्ष्य देते हैं? (किसी ने कहा- पूरा लक्ष्य) बाप तो कहते हैं- मेरा हर बच्चा राजा बच्चा बने। लेना है तो पूरा ही लेवें, कम क्यों लेवें। तो

बताया- मौत सामने खड़ा है, क्विक पुरुषार्थ चाहिए। ऐसा न हो कि उस सम्पूर्ण प्राप्ति में, प्राप्ति करने में टू लेट का बोर्ड लग जावे।

बच्चों को कितना सहज समझाते हैं, तो बच्चों को इस बात की फीलिंग होनी चाहिए कि जैसे बाप बताते हैं वैसे बच्चे नहीं समझाते, और-2 दुनिया भर की बातों की तिक-2 करते रहते हैं। क्या चाहते हैं बाप? सुप्रीम सोल बाप जो ज्ञान-सूर्य है, वो हम बच्चों से समझाने के बारे में क्या चाहते हैं? अरे, नहीं समझा। (किसी ने कहा-मेरे बच्चे राजा बनें।) कैसे बनेंगे राजा? (किसी ने कहा-बाप ने जो समझाया उसको वो टेपरिकॉर्डर से...) बाप ने तो बहुत कुछ समझाया। (किसी ने कहा-ब्रह्मा मुख के द्वारा जो समझाया।) ब्रह्मा मुख से बहुत कुछ समझाया। लेकिन वो समझाने का जो मूल बिन्दु है, वो क्या है? जो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर मुकर्रर हीरो पार्टधारी है, उस हीरो पार्टधारी का पूरा परिचय देना। वो पूरा परिचय नहीं देते हैं और दुनियाभर की बातों की तिक-2 करते रहते हैं। बेसिक नॉलेज लेने वाले ब्राह्मणों की तो बात ही छोड़ दो, दुनिया में जिनकी हुज़ूम-की-हुजूम कनवर्टिड संख्या है। वो तो अपने ही नशे में, देहभान में धुत्त रहते हैं, कौओं की तरह काँव-2 करते ही रहते हैं, शास्त्र प्रसिद्ध यादवों की तरह भगवान बाप को भगवान के रूप में जानते ही नहीं हैं। यादव भगवान को जानते थे? नहीं जानते थे। तुम बच्चों ने भगवान बाप को जाना है। तुम सच्चा रास्ता बताने वाले पाण्डु के पाण्डव बच्चे हो। तो बच्चों को यह फीलिंग आनी चाहिए कि हम तो ऐसे नहीं समझाते। कैसे? जैसे बाप हमसे चाहते कि ऐसे समझाओ। ये फीलिंग आना चाहिए-अरे! हम तो ऐसे करते हैं, ये करते हैं, वो करते हैं, फलाना ये करते हैं, फलाना वो करते हैं। ये बातें तो आती हैं। पता नहीं क्या करते हैं जो ये क्यों नहीं समझाय सकते हैं? यह समझानी उनकी बुद्धि में क्यों नहीं बैठती है कि हम पहले-2 बाप का परिचय देवें? कौन-से चित्र की बात हो रही है? त्रिमूर्ति की बात हो रही है। त्रिमूर्ति में कौन-सी मूर्ति बाप है, जिसका पहले-2 परिचय देना है? कौन-सी मूर्ति है? सम्पूर्ण शंकर अर्थात् शिवलिंग मूर्ति, अव्यक्त-मूर्ति, ऊँचे-ते-ऊँचा करतार; करनहार भी है और करावनहार मूर्ति भी है; व्यक्त मूर्ति भी है, अव्यक्त मूर्ति भी है। जिसको गीता में 'अव्यक्त मूर्तिना' (गीता 9/4) कहा गया है। शिवलिंग जिसकी यादगार दुनिया की खुदाइयों में सबसे ज़्यादा प्राप्त हुई है, सार्वभौम मूर्ति है। तो त्रिमूर्ति के चित्र में समझाओ- ये है तुम्हारा शिवबाबा। क्या है- बाबा या बाप? बाबा की तो परिभाषा बता दी। साकार और निराकार के मेल को 'बाबा' कहा जाता है। तो त्रिमूर्ति के चित्र में ब्रह्मा बाबा को बाबा नहीं कहेंगे? (किसी ने कहा-दादा) वो साकार में निराकार बाप नहीं था? लेकिन अभी तो है नहीं। तो जो वर्तमान प्राप्ति है उसको छोड़ दें और जो पास्ट में हो चुका उसको भक्तों की तरह याद करते रहें- यह तो भक्तिमार्ग हो गया। अच्छा, विष्णु की मूर्ति को भी बाबा नहीं कहेंगे क्योंकि वो तो सम्पूर्ण देवता है। वो सम्पूर्ण

देवता बनने वाला है या बनाने वाला है? (किसी ने कहा- बनने वाला है) जिसे हम कहते हैं- हमारा बाबा, वो बाबा तो सम्पूर्ण देवता बनने वाला भी है और उस बाबा में बनाने वाला भी है। कौन है बनाने वाला? (किसी ने कहा-शिव बाप) शिव बाप अकेला? (किसी ने कहा-बाबा) बाबा- जिसमें साकार और निराकार का मेल हो । यह भी न कह सकें कि ये सिर्फ़ ज्योतिबिन्दु आत्मा है। इसका नाम सिर्फ़ 'शिव' है। बाबाशिव भी नहीं। जैसे शंकरशिव नहीं कहते। क्यों नहीं कहते? क्योंकि बड़े का नाम पहले और छोटे का नाम बाद में। तो मेरी बिन्दी का ही नाम 'शिव' है। जो बिन्दु रूपी स्टेज धारण कर जाए, बाप समान बन जाए- उसे कहेंगे शिव समान और साथ में साकार शरीर भी हो। वो तो शंकर भी है। शंकर में सदाशिव तीसरा नेत्र भी दिखाते हैं। संकरण है तीन आत्माओं का- चन्द्रमा भी है, सदाशिव भी है और स्थूल नेत्रधारी भी है। तीन आत्माओं का संकरण है तो शंकर है। तो शंकर की मूर्ति को शिवबाबा कहें या न कहें? शंकर की मूर्ति जो याद में बैठी हुई है, याद का पुरुषार्थ कर रही है, उसको शिवबाबा कहें? अरे, शिव के मंदिर में बीच में शिवलिग होता है और बाजू में और-2 देवताओं के साथ मुख्य स्थान पर शंकर की मूर्ति रखते हैं। तो भगवान एक है या दो हैं? (किसी ने कहा- एक है) तो कौन है? शंकर की मूर्ति को भगवान कहें जो देवताओं के बीच में रखा है, या शिवलिग को कहें? इससे साबित हुआ कि जो मूर्ति साकार तो है, बड़ा रूप तो है; लेकिन उस बड़े रूप को अपनी इन्द्रियों का भान नहीं है- देखते हुए नहीं देखता, सुनते हुए भी नहीं सुनता, कर्मेन्द्रियों से कर्म करते हुए भी कर्म नहीं करता, कर्म का कोई फल ही नहीं निकलता। कर्मेन्द्रियों से जो कर्म किया जाता है उसका फल निकलता है या नहीं निकलता? कामेन्द्रिय से जगत के सम्पूर्ण प्राणी कर्म करते हैं तो सृजन क्रिया करते हैं, फल निकलता है, बच्चा पैदा होता है या नहीं होता है? होता है और वो अव्यक्त-मूर्ति शिवलिग ऐसा है कि कर्म तो करता है; लेकिन संसार की तरह सांसारिक सृजन नहीं करता, बेहद ब्राह्मणों की मानसी सृष्टि का सृजन करता है, जो ब्राह्मण, ब्राह्मण से क्या बन जाते हैं? देवता बन जाते हैं। माना जिस सत्व से संसार सृजन करता है, वीर्य से सृजन करता है, वो लिग मूर्ति नहीं करती। इन्द्रियाँ प्रबल हैं, इन्द्रियों से भी प्रबल मन है और मन से प्रबल बुद्धि है और बुद्धि को भी परमबुद्धि बनाने वाला वो बुद्धिमानों की बुद्धि एक शिव है, जो इस सृष्टि पर आ करके ऐसा बुद्धि का वायब्रेशन तैयार करा देता है कि वायब्रेशन से सृष्टि पैदा होती है। कोई भी प्राणि-मात्र वायब्रेशन से सृष्टि पैदा कर सकता है? नहीं कर सकता है। ये बेहद का वीर्य है, जिससे सतयुग के राधा-कृष्ण जैसे सत्वप्रधान बच्चे का जन्म होता है, पहले पत्ते का जन्म होता है और यहाँ संगमयुग में नौ कुरी के ब्राह्मणों में से जो अव्वल नम्बर सूर्यवंशियों की कुरी है, उस अव्वल नम्बर कुरी के ब्राह्मणों का जन्म होता है। जैसा बाप वैसे बेटे। वो सभी बच्चे, जो रुद्र के बच्चे हैं, वो बेहद का वीर्य तैयार करते हैं। इन्द्रियों के द्वारा? मन-बुद्धि के वायब्रेशन

द्वारा। ऐसा सत्व तैयार करते हैं, जिससे नई दुनिया की नई राजधानी भी स्थापन होती है। उस राजधानी से श्रेष्ठ राजधानी दुनिया में न कभी हुई है और न कभी होगी। तो ये बातें बच्चों की बुद्धि में क्यों नहीं बैठती है? त्रिमूर्ति के चित्र में यह पक्का बुद्धि में बैठा देना चाहिए- ये है तुम्हारा बाबा। किस तरफ इशारा करेंगे- ब्रह्मा की मूर्ति की ओर, विष्णु की मूर्ति की ओर, शंकर की मूर्ति की तरफ? अरे, यहाँ आके रुक गए। कौन-सी मूर्ति की तरफ इशारा करेंगे- ये है तुम्हारा बाबा? अरे, अभी फिर बता दो! (किसी ने कहा- अव्यक्त) अव्यक्त-मूर्ति। जो मूर्ति भी है और अव्यक्त स्टेज वाली भी है, जिसमें सम्पूर्ण आत्मा को नाक-आँख-कान इंद्रियाँ/कर्मेन्द्रियाँ, ज्ञानेन्द्रियाँ दिखाई ही नहीं देतीं। आँखों से जो दिखाई देता है वो है व्यक्त और आँखों से जो दिखाई नहीं देता वो है अव्यक्त। तो जब उन समझने वाले जिज्ञासुओं की बुद्धि में बैठे कि हाँ, ये है हमारा बाबा। तो उनसे कहो- लिखो कि हमारा बाबा बेहद का बाबा है, बेहद ब्राह्मणों की सृष्टि रचता है, जो बेहद के ब्राह्मण, ब्राह्मण सो देवता बन जाते हैं; इसलिए आज भी ब्राह्मणों की पूजा होती है, देवता समझ करके पूजन करते हैं। भई, वो ब्राह्मणों में पहला-2 चोटी का ब्राह्मण, वो प्रजापिता ब्रह्मा- ये बात भी ठीक है; क्योंकि प्रूफ के रूप में प्रजापिता ब्रह्मा, प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों का बाप है ना! तो प्रजापिता ब्रह्मा है या नहीं है? है। तो इसका प्रूफ क्या है? उसका प्रूफ हम बच्चे बैठे हैं। हम क्या कहते हैं अपन को? इस सृष्टि में हमारा कोई बाप नहीं, हम एक बाप को मानने वाले हैं। हमारा एक ही बेहद का बाप है, एक ही हमारी माँ है, जिसके लिए शास्त्रों में हम गाते आए हैं- "त्वमेव माता च पिता त्वमेव।" संस्कृत में 'त्वम्' एक को कहा जाता है। एक पर्सनालिटी की ओर इशारा किया है- तू ही मेरी माता है। कौन? (किसी ने कहा- परमब्रह्म) माता भी है और उस परमब्रह्म में परमपुरुष रूप में हमारा बाप भी है। तो प्रूफ के रूप में हम ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ बैठे हैं। ये सब ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हम यहाँ बैठे हैं ना! यहाँ हमने बाप से जन्म लिया तो हम यहाँ बैठे हैं। प्रजापिता ब्रह्मा यहाँ ही होगा ना!

शास्त्रों में लिखा है कि सारी सृष्टि किससे पैदा होती है? सारी सृष्टि ब्रह्मा की औलाद है। तो सारी मनुष्य-सृष्टि में 500/700 करोड़ जो भी बच्चे हैं, वो किसके बच्चे हैं? (किसी ने कहा- प्रजापिता के) परमब्रह्म के बच्चे हैं। उनको शिव का बच्चा कहें? क्यों नहीं कहें? वो 500/700 करोड़ मनुष्य-आत्माएँ, आत्मा नहीं हैं? अरे, हैं या नहीं? (किसी ने कहा- हैं) फिर? तो उनका बाप, 500/700 करोड़ मनुष्य-आत्माएँ, तो उनका बाप शिव क्यों नहीं? (किसी ने कहा- आत्माओं का बाप है) शिव आत्माओं का बाप है! 500/700 करोड़ मनुष्य-आत्माएँ आत्मा नहीं हैं? प्रजापिता भी मनुष्य है। (किसी ने कहा- शिव बाप समान एक बनता है।) वो तो जब बन जाएगी तब बन जाएगी, अभी मानने की बात है। मानना अभी है, जानना अभी है, जब बन

जाएगी तब जानेंगे? (किसी ने कहा- अभी जानना है) तो सुप्रीम सोल शिव, जिसकी बिन्दी का ही नाम 'शिव' है, वो हमारा ही बाप है स्पेशल? हम बच्चे ही उससे स्पेशल वर्सा लेते हैं। और दूसरी 500/700 करोड़ मनुष्य-आत्माएँ स्पेशल वर्सा नहीं लेती हैं क्या? लेती हैं या नहीं? नहीं लेती हैं और हम स्पेशल वर्सा लेते हैं। क्यों? (किसी ने कहा-बाप तो सभी आत्माओं का) ये भी पार्शेलिटी है? (किसी ने कहा- बाप को पहचानते नहीं) अगर पहचानेंगे नहीं तो बाप के घर में कैसे जाएँगे? महामृत्यु के समय सभी मनुष्य-आत्माएँ अपना शरीर छोड़-2 करके बाप के घर में जाएँगी या नहीं जाएँगी? (किसी ने कहा- जाएँगी) पहचानके जाएँगी या बिना पहचाने जाएँगी? (किसी ने कहा- मार खाके, सज़ा खाके) आहा, कैसे भी सही! माना जो बाप के बच्चे कहे हैं, तुम बच्चे, सन्मुख बैठने वाले, उनमें से मार कोई भी नहीं खाएगा? (किसी ने कहा- खाएँगे) हाँ, तो फिर क्या बात हो गई- वो भी मार खाएँगे, ये भी मार खाएँगे। (किसी ने कहा- सज़ाएँ खाएँगे; लेकिन वो खाएँगे, वो फ़र्क पड़ जाएगा।) क्या फ़र्क पड़ेगा? (किसी ने कहा- अभी हम मानते हैं कि हमारा बाप सामने बैठा है।) (किसी ने कहा- वो तो मार खाएँगे तब बोलेंगे- हाँ, बाबा, मेरा बाप है।) वो मार खाएँगे, हम मार नहीं खाएँगे? (किसी ने कहा- खाएँगे; लेकिन हमारा किया हुआ कर्म से मार खाएँगे ना!) अरे, वो बिना किए हुए कर्म की मार खा जाएँगे? (किसी ने कहा- लेकिन बाप को पहचानने के बाद भी हम कर्म करते, तो फिर) अरे, वो बाप को पहचाने बगैर बाप के घर में जाएँगे? (किसी ने कहा- ऐसे नहीं जाएँगे; लेकिन मार खाने के बाद तो जाना है।) बोलो-3, जम के बोलो! (किसी ने कहा- बाप प्रत्यक्ष होगा तो सब पहचानेंगे ना!) नहीं, वो हमारा ही स्पेशल बाप इसलिए है कि हम ही उस बाप के ज्योतिबिन्दु स्वरूप में टिक जाते हैं और देहभान को छोड़ देते हैं। देहभान को भूल करके आत्मिक स्थिति में ऐसे टिकते हैं जो 9 लाख सितारे गाए जाते हैं। जिनमें से 4.5 लाख दिन के सितारे ऐसे हैं- सूर्यवंशी स्पेशल, जो अपने संकल्पों को, एक-2 संकल्प को स्वेच्छा से बाप के संकल्पों में तिरोहित कर देते हैं। मन्मनाभव, मेरे मन के संकल्पों में समा जा- ऐसा प्रैक्टिकल पार्ट बजाने वाले हम बच्चे हैं। मैं बिन्दु, मेरा बाप भी ज्योतिबिन्दु। और आत्माएँ बिन्दु के संकल्प में, बीज रूपी स्टेज के संकल्प में टिक ही नहीं सकेंगी, हम टिक जाएँगे; इसलिए इस सृष्टि में शरीर से रहते हुए भी हमारे शरीर का विनाश नहीं होगा, और सबके शरीरों का विनाश हो जावेगा। हमारा शरीर भी-शरीर रूपी नैया कहो, शरीर रूपी जहाज़ कहो, शरीर रूपी चाप कहो-सतोप्रधान बन जावेगा। बाप ने हमको बताया है- तुम्हारी आत्मा और शरीर रूपी नैया का पार ले जाने वाला खिवैया एक ही बाप है। "आत्मा और शरीर रूपी नइया को पार ले जाने वाला एक ही बाप खिवैया है।" (मु.ता. 3.11.74 पृ.1 आदि) काहे-2 को पार ले जाएगा? आत्मा को भी और शरीर रूपी नैया को भी पार ले जाएगा। खिवैया नवैया को डुबो दे तो बिठैया का क्या हाल होगा? वो भी डूब

जाएगा; लेकिन हमारा खिवैया ऐसा बेहद का खिवैया है, जो इस विषय वैतरणी नदी से, विषय-सागर से पार लगा करके, शरीर रूपी नैया की भी गारण्टी देता है और नैया में बिठैया, बैठी हुई आत्मा की भी गारण्टी देता है। खास हम रुद्रमाला के मणकों की गारण्टी देता है। जो आत्मा रूपी सितारे ज्ञान-चंद्रमा की रोशनी में पलने वाले हैं, वो अपने प्रकाश को ज्ञान-चंद्रमा में मर्ज नहीं करते हैं, अपना अस्तित्व अलग दिखाते हैं। वो बिन्दु रूपी आत्मिक स्टेज को नहीं प्राप्त कर सकते हैं। ये दुनिया में जो परम्परा चल रही है- बाप का नाम, फिर फर्म का नाम लिखते हैं- 'एण्ड सन्स कम्पनी।' बच्चे बाद में और बाप पहले। ये परम्परा सूर्यवंशियों की चलाई हुई है, चंद्रवंशियों, इस्लामवंशियों, बौद्धीवंशियों की चलाई हुई परम्परा नहीं है। वो सुप्रीम सोल बाप के प्रैक्टिकल स्वरूप को उतना महत्व ही नहीं देते। इसलिए बोला- वो पहला-2 इस सृष्टि में सब प्रकार की परम्पराओं को आदि करने वाला बाप इस सृष्टि में यहाँ होगा, कोई सूक्ष्मवतन में थोड़े ही परम्पराओं को आरम्भ करेगा!

ब्रह्मा अभी वर्तमान में जो है। कभी? मुरली कब की है? 1966 के लिए बताया। ब्रह्मा अभी जो है, अभी हम सभी पतित हैं। माना 1947 में जो ब्रह्मा नामधारी घोषित हुआ था, सब ब्राह्मणों के पहचान में आया था, वो ब्रह्मा और उसके फॉलोअर्स और; और कौन? परमब्रह्म भी। ये सभी क्या हैं? पतित हैं। भविष्य में पावन बनेंगे। अभी पतित हैं, फिर जब पावन बनेंगे तो सभी पावन हो जावेंगे। एक के पावन बनने से सब पावन हो जाते हैं, एक के पतित बनने से सब पतित बन जाते हैं। "एक को पावन बनने से सभी पावन बन जाते हैं। एक पतित होते तो सभी पतित हो जाते हैं।" (मु.ता. 13.4.69 पृ.3 आदि) तो बताओ, वो एक कौन है? (किसी ने कहा- ब्रह्मा बाबा) ब्रह्मा बाबा! वो एक आत्मा कौन है जो द्वापरयुग के आदि से पहले-2 पतित बनना शुरू होती है? बताओ। (किसी ने कहा- राम वाली आत्मा) हाँ जी, एक ही पहले पतितपने की शुरुआत करता है और एक ही पावन बनने की भी शुरुआत करता है। वो सबका बाप है। पतितों का भी बाप है और पावन बनने वालों का भी बाप अर्थात् बीज है। बीज पहले या झाड़ के अन्य अवयव पहले? बीज पहले। जब हम बीज पावन बनेंगे तो सभी ऐसे पावन हो जावेंगे- ऐसे कह करके किस तरफ इशारा किया? सभी ऐसे पावन हो जावेंगे। 'ऐसे' माने? अरे, बाबा इशारा करते थे। 'ऐसे' कहकर किसकी तरफ इशारा किया होगा? (किसी ने कहा-लक्ष्मी-नारायण की तरफ) नारायण की तरफ इशारा किया, पवित्र हो जावेंगे। जब पवित्र हो जावेंगे तो सूक्ष्मवतनवासी बन जावेंगे। कब बोला? 1966 में बोला। पहले मन में संकल्प आता है, फिर बोला जाता है, फिर प्रैक्टिकल कर्मेन्द्रियों से किया जाता है। तो जितनी भी इन्द्रियाँ हैं उनमें सबसे प्रबल इन्द्रिय कौन-सी है? (किसी ने कहा- मन) तो बोला- पहले हम सूक्ष्मवतनवासी हो जावेंगे। कौन? जो भी नम्बरवार

ब्रह्मा सो विष्णु बनने वाले होंगे। ब्रह्मा भी सूक्ष्मवतनवासी तो विष्णु भी सूक्ष्मवतनवासी। तो सबसे ऊँची सूक्ष्म पुरी में कौन वासी? शंकर भी सूक्ष्मवतनवासी। तो पहले-2 सूक्ष्मवतनवासी कौन बनता होगा? (किसी ने कहा-शंकर) जो सबका बाप है। (किसी ने कहा- प्रजापिता) सभी मनुष्य-सृष्टि का बाप है राम वाली आत्मा, आदि है, सारी मनुष्य-सृष्टि का आदि, वो पहले सूक्ष्मवतनवासी बनता होगा। तो कब से बना? यह वाणी तो वाचा में आई 1966 में। वो आत्मा जो काम के आधार पर शंकर नाम-रूप धारण करती है, वो सूक्ष्मवतनवासी कब से बनती है? (किसी ने कहा- 76 से राम बाप साकारी से आकारी बना।) अव्यक्त वाणी में बोला- बाप साकारी से आकारी बना, आकारी से निराकारी बना। "बाप भी साकार से आकारी बना, आकारी से फिर निराकारी और फिर साकारी बनेंगे।" (अ.वा.ता. 15.9.74 पृ.131 मध्य) निराकारी मूल रूप है। तो कब बना? निराकारी कब बना? अरे, अभी पिछली अव्यक्त वाणी आई है, उसमें बोला है- 18 जनवरी स्मृतिदिवस नहीं है। पहला-2 स्मृतिदिवस 5 दिसम्बर है। (किसी ने कहा- अव्यक्त वाणी में बोला) तो किस तरफ इशारा हुआ होगा? (किसी ने कहा-बाप के पार्ट की तरफ) सूक्ष्मवतन से ही अव्यक्त मिलन होता है, सूक्ष्म शरीर से ही होता है या असली मिलन बीज-रूप स्टेज का है? (किसी ने कहा- बीज-रूप स्टेज का) प्रैक्टिकल में आत्मा जब बिन्दु-रूप धारण कर ले, उस स्टेज में टिकने लगे तो शिव बाप से मिल सकती है। जैसे बहुत-से ब्राह्मण बच्चे अभी भी कहते हैं- बिन्दी को कैसे याद करें? इसका मतलब उनको ज्योतिबिन्दु याद ही नहीं आता। जैसे माँ को बच्चे का रूप याद आता है। ऐसे मनुष्य-आत्माओं को जब तक आत्माओं के बाप का असली रूप ही याद नहीं आता तो आत्मिक स्मृति में टिका हुआ कहा जाए? (किसी ने कहा- नहीं) तो कौन-सी आत्मा है जो पहले-2 इस आत्मिक रूप में टिकती है? (किसी ने कहा- राम वाली आत्मा) जब आत्मिक रूप में टिकती है तो शिव बाप से भी मिल सकती है। आत्मा के रूप में टिकने के लिए पहले ज्ञान मिलेगा या पहले टिकेगी? पहले ज्ञान मिलता है। तो बता दिया है, ब्रह्मा मुख की वेदवाणी कहो, मुरली कहो, उसमें बता दिया है- तुम बच्चे डायरैक्ट बाप से सीखोगे। कब? जब आत्मा की देह-अभिमान की सारी कट उतर जावेगी, बिन्दु बन जावेंगे तो तुम डायरैक्ट किससे सीखोगे? बाप से सीखोगे। "बाबा को जितना याद करेंगे उतना लव रहेगा। कशिश होगी ना। सुई साफ है तो चकमक तरफ खैंचेगी। कट लगी हुई होगी तो खैंचेगी नहीं। यह भी ऐसे ही है। तुम साफ हो जाते हो तो पहले नम्बर में चले जाते हो। बाप की याद से कट निकल जावेंगी।" (मु.ता. 16.3.68 पृ.3 मध्यांत) कौन-सा बाप? कौन-सी आत्मा? सिखाने वाली कौन-सी आत्मा बाप के रूप में? अरे, (किसी ने कहा- राम वाली) हर बात में राम को ही पकड़ लिया। अरे, राम बाप को सिखाने वाला कोई है या वो अपने-आप सीख गया? (किसी ने कहा- शिव बाप) हाँ, शिव बाप पहले-2 राम वाली आत्मा, जो बिन्दु-रूप

स्टेज में टिक जाती है या टिकना सीख जाती है, उससे मिलन-मेला मनाती है। तो दोनों आत्माओं का अव्यक्त मिलन, पहला-2 अव्यक्त मिलन साबित होता है या नहीं साबित होता है? (किसी ने कहा- साबित होता है) वो अव्यक्त मिलन बताया- 5 दिसम्बर है। 18 जनवरी नहीं, जब दादा लेखराज ब्रह्मा ने शरीर छोड़ा, तो वो जा करके सीधा परमधामवासी बाप से मिल गया क्या? दादा लेखराज ब्रह्मा के लिए कहें कि उन्होंने देहभान को पूरा छोड़ दिया? हम बच्चों के लिए बोला है- तुम बच्चों का अर्थात् योगियों का कभी हार्टफेल नहीं हो सकता। "याद से ही आयु बड़ी होनी है। ... पुरुषार्थ करना है निडर हो रहने का। शरीर आदि का कोई भी भान न आवे। उसी अवस्था में जाना है। ... यह रीहलसल तीखी करनी पड़े। प्रैक्टिस न होंगी तो खड़े हो जावेंगे, टाँगें धिरकने लग पड़ेंगी और हार्टफेल अचानक होता रहेगा। ... योग वाले ही निडर रहेंगे। योग से शक्ति मिलती है।" (रात्रि मु.ता.15.6.69) "योगी की आयु हमेशा बड़ी होती है। भोगी की कम।" (मु.ता.31.8.69 पृ.3 आदि) ब्रह्मा दादा लेखराज का हार्टफेल हो गया। कारण? देहभान को छोड़ पाया या नहीं छोड़ पाया? (किसी ने कहा- नहीं छोड़ पाया) इसलिए हार्ट फेल हो गया। जो बच्चे बिन्दु-रूप की स्टेज में टिक जाते हैं, उनका देह-अभिमान का कट उतर जाता है; इसलिए बोला- तुम्हारी जब आत्मा की पूरी कट उतर जावेगी। कौन-सी कट? (किसी ने कहा- देहभान की) 'देह' माने मिट्टी। कट होती है, जंक लगती है ना, मिट्टी ही तो कहते हैं, वो कट जब पूरी उतर जावेगी तो तुम डायरैक्ट बाप से सीखोगे। तो डायरैक्ट बाप से सीखने वालों में अव्वल नम्बर किसका हुआ? कौन होगा? (किसी ने कहा-राम बाप) वो ही बाप (किसी ने कहा- प्रजापिता) जिसको परमब्रह्म बोला है, जो सारी मनुष्य-सृष्टि का पिता भी कहा जाता है (तुम्हीं माता-पिता तुम्हीं हो)। वो आत्मा ब्रह्मा के द्वारा दिया हुआ जो बेसिक ज्ञान है, उस बेसिक ज्ञान के बतौर अपने को ज्योतिबिन्दु आत्मा मानकर, प्रैक्टिस करते हुए, ज्योतिबिन्दु-स्वरूप में पहले टिकता है और जब उस रूप में टिकता है तो शिव बाप का डायरैक्शन है- अपन को आत्मा समझकर फिर बाप को याद करो। मैं आत्मा ज्योतिबिन्दु, मेरा बाप भी ज्योतिबिन्दु। तो तुम बच्चे जितना मुझे याद करते हो ओरिजिनल रूप में, उतना मैं तुम्हारे साथ हूँ। तो जो बताया कि हम पवित्र हो जावेंगे माना देहभान की कट उतर जावेगी, तो फिर तुम (मनन-चिन्तन शील) सूक्ष्मवतनवासी हो जावेंगे। मतलब? जैसे दादा लेखराज ब्रह्मा ने शरीर छोड़ दिया, ऐसे हो जावेंगे? क्या मतलब? (किसी ने कहा- मनन-चितन-मंथन) हाँ, आत्मा इस लौकिक दुनिया को, देह को, देह के संबंधों को, देह के पदार्थों को भूल जावेगी, बिन्दु-रूप में टिक जावेगी, अव्यक्त हो जावेगी। बिन्दु-रूप भी अव्यक्त स्टेज है या नहीं है? (किसी ने कहा- है) सूक्ष्म शरीर भी अव्यक्त है; लेकिन सूक्ष्म शरीर दो प्रकार का है- एक उनका है जो बहुत पाप करते हैं और आत्महत्या-जैसा आपघात करते हैं, जीवघात

करते हैं और दूसरों की भी हत्या कर देते हैं। ऐसे जघन्य पाप करने वाले सूक्ष्म शरीर धारण करते हैं। भले उन सूक्ष्म शरीर धारण करने वालों में भी कैटागिरीज़ अलग-2 हैं- कोई फरिश्ता, कोई ज़िन्नाद, कोई भूत, कोई प्रेत, कोई दुखदायी, कोई सुखदायी भी होते हैं। तो जो भूत-प्रेत बनते हैं, वो भी सूक्ष्म स्टेज है, सूक्ष्म शरीर है; लेकिन शरीर में रहते-2 जो देह को भूल जाएँ, अव्यक्त बिन्दु-रूप स्टेज में टिक जाएँ, वो भी अव्यक्त स्टेज है और ऊँची स्टेज है। अव्यक्त स्टेज में जब तक नहीं टिकेंगे तब तक शरीर रहते मनन-चितन-मंथन की स्टेज नहीं आ सकती। जितना-2 निराकारी स्टेज में टिकेंगे, बीज-रूप बनेंगे तो विस्तार अपने-आप हो जावेगा। विस्तार में जाना सहज है या सार में टिकना सहज है? (किसी ने कहा- विस्तार में जाना) विस्तार अपने-आप होता है और वृक्ष को बीज-रूप बनने में बड़ा लम्बा टाइम लग जाता है। तो सार में टिकने में, बिन्दु-रूप बनने में ज़्यादा मेहनत है; क्योंकि वो अव्यक्त स्टेज है। "अव्यक्ताद् हि गतिः दुःखम् देहवद्भिः अवाप्यते॥" (गीता 12/5) जो अव्यक्त बिन्दु-रूप स्टेज है, वो देहधारियों के द्वारा बड़ी मुश्किल से प्राप्त होती है; परन्तु दुनिया की जो सशक्त आत्माएँ हैं, धर्मपिताएँ-जैसी लिडिग आत्माएँ ही वो रास्ता चुनती हैं, भल कठिन है; लेकिन शॉर्ट है या लम्बा रास्ता है? (किसी ने कहा- लम्बा) नहीं, ''हिम्मते बच्चे, मददे बाप।'' जो ज्ञान में आने के बाद, पहचान होने के बाद, फाउण्डेशन काल से ही उस बीज-रूप स्टेज में टिकने के प्रबल पुरुषार्थी बन जाते हैं, उनको वो स्टेज जल्दी प्राप्त हो जाती है 'क्षिप्रं भवति मुक्तात्मा' (गीता 9/31)। तो बताया- तुम जब पवित्र बन जावेंगे तो सूक्ष्मवतनवासी बन जावेंगे। 'तुम' माने कौन? (किसी ने कुछ कहा-...) बाप के सन्मुख बैठकर पढ़ाई पढ़ने वाले, डायरैक्ट पढ़ाई पढ़ने वाले बन जावेंगे। तो डायरैक्ट पढ़ाई पढ़ने वालों में अव्वल नम्बर कौन हुआ? (किसी ने कहा- प्रजापिता) जो प्रजापिता अव्वल नम्बर है वो अन्तर्वाहक शरीर से डायरैक्ट पढ़ाई सूक्ष्मवतनवासी बन करके पढ़ता है माना मनन-चितन-मंथन की स्टेज में टिकता है। "अन्तःवाहक अर्थात् अव्यक्त फ़रिश्ते रूप में सैर करना।" (अ.वा. 11.10.75 पृ.171 आदि) यह नियम है- जितना सार रूप बिन्दु को याद करेंगे, बिन्दु-रूप में सूक्ष्म स्टेज में टिकेंगे, उतना विस्तार स्वतः ही हो जावेगा, वो बिन्दु-रूप स्टेज विस्तार में ले आएगी। प्रैक्टिस करके देखें, खासकर अमृतवेले में। अमृतवेले यह प्रैक्टिस कर ली तो सारा दिन मनन-चितन-मंथन चलता रहेगा और उसका तरीका है- जितना सेवा करेंगे, सेवाधारी बच्चों को कौन याद करता है? (किसी ने कहा- बाप) जिनको शिव बाप याद करेगा/स्मरण करेगा, उनकी स्मृति भी पावरफुल बन जाती है; इसलिए ब्राह्मण जीवन में पल-2 सेवा में लगा रहना है। तन से सेवाधारी, मन के संकल्पों से ईश्वरीय सेवाधारी और जो भी टटपुँजिया धन है, उस धन के चप्पे-2 को कौन-सी सेवा में लगाने वाला सेवाधारी? (किसी ने कहा- ईश्वरीय सेवा में) तो ऐसे सेवाधारी बच्चों को, आत्माओं को, बाप

याद करता है। बाप याद करेगा तो बिन्दु-रूप की स्टेज में टिक जाएँगे। बाप को याद करेंगे तो सुप्रीम टीचर की भी याद आ जाएगी। सुप्रीम टीचर क्या करता है? (किसी ने कहा- पढ़ाता है) क्या पढ़ाता है? प्रोज़ और पोएट्री का विस्तार बताता है। माना गीता जो हमारी माता है, पोएट्री है, गीता गीत है, उसके एक-2 शब्द का हिज्ज़े-2 करके विस्तार बताता है और जो अव्यक्त वाणी है, वो हमारी प्रोज़ है, उसका भी विस्तार बताता है। तो बाप हमको बीज-रूप स्टेज में स्थिर कराके विस्तार में ले जाता है, मनसा के मनन-चितन-मंथन के विस्तार में ले जाता है। तो कहाँ का वासी बना देता है? (किसी ने कहा- सूक्ष्मवतनवासी) पहले-2 कौन-सी आत्मा सूक्ष्मवतनवासी बनती है? कौन-सी आत्मा को, गीता जो गीत है, पोएट्री है, उसके गहरे विस्तार का पता लग जाता है? (किसी ने कहा- प्रजापिता) मनुष्य-सृष्टि का जो बाप है, सारी मनुष्य-सृष्टि का बीज है, वो मनसा में सूक्ष्मवतनवासी बन जाता है। फिर क्या होता है? मनन-चितन-मंथन के विस्तार में जाते-2 अपने 84 जन्मों के विस्तार को पहचानेगा या नहीं पहचानेगा? (किसी ने कहा- पहचानेगा) अपनी जो दुनिया है, अपनी आत्मा के कनेक्शन में आने वाली दुनिया, 84 जन्मों में अनेक आत्माएँ सम्बंध में आती हैं, सम्पर्क में आती हैं, संसर्ग में आती हैं, उनके साथ मैंने क्या-2 पार्ट बजाया है, कौन-से स्थान विशेष पर पार्ट बजाया है, कैसा-2 पार्ट बजाया है, सारा विस्तार रूपी मनन-चितन-मंथन बुद्धि में आता रहता है। जब ऐसा विस्तार पक्का हो जाता है, फिर क्या होता है? अरे, वृक्ष का पूरा विस्तार हो जावेगा, फिर क्या होता है? (किसी ने कहा-बीज निकलता है) फूल आता है, फल बनता है, उसमें बीज आता है, फल पक जाता है और बीज अपने को फल से डिटैच कर देता है। तो सृष्टि रूपी वृक्ष का कोई पहला फल तो होगा जिसके अंदर का बीज अपने को वृक्ष से पहले डिटैच करता है? यह है मनुष्य-सृष्टि का झाड़ ('अश्वत्थमाहुरव्ययम्...' गीता 15/1), इसमें भी कोई बीज है अव्वल नम्बर का, जो सारे वृक्ष से अपने को डिटैच कर देता है, नो अटैचमेंट। इसका मतलब यह नहीं है कि संन्यासी बन जाता है, कर्मेन्द्रियों के कर्म छोड़ देता है। कर्मेन्द्रियों से देह का संन्यास करना है या मन-बुद्धि से संन्यास धारण करना है? मन-बुद्धि से डिटैच होना है। तो बताया कि सूक्ष्मवतनवासी से फिर मूलवतनवासी हो जावेंगे। जब अपने सृष्टि रूपी वृक्ष को सम्पूर्ण जान जावेंगे, हर आत्मा/सितारे का अपना-2 वृक्ष होगा या नहीं होगा? (किसी ने कहा- होगा) जो गायन है- 'हर सितारे में अपनी एक दुनियाँ होती है'। तो जब जान जावेंगे, फिर क्या रिज़ल्ट होगा? सारा विस्तार जब हो गया तो वृक्ष में से वो बीज अपने को डिटैच कर देता है। कहाँ का वासी हो जाता है? इस दुनिया से डिटैच होगा तो मन-बुद्धि कहाँ रखी रहेगी? (किसी ने कहा- मूलवतन यानी आत्मलोक में) मूलवतनवासी हो जावेंगे। ये बात समझना बिल्कुल सहज है और ये

बात समझना इनके ऊपर तो और ही सहज है। किनके ऊपर? (किसी ने कहा- लक्ष्मी-नारायण) लक्ष्मी-नारायण वाली आत्मा के लिए तो और ही सहज है।

और चलो, देखो सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग। अभी कलियुग है। सब मरने वाले हैं, कलियुग का अंत है। बाकी ये ल०ना० बचने हैं। (चित्र में इशारा किया।) लड़ाई सामने खड़ी है। अभी कुछ भी करना है तो अभी करना है। कुछ भी माने? अरे, जो भी तीव्र पुरुषार्थ करना है तन के द्वारा, धन के द्वारा, मन के संकल्पों के द्वारा, वो तीव्र पुरुषार्थ अभी करना है और है बहुत सहज। बाबा बड़ा सहज समझाते हैं, मैं जानता हूँ। क्या जानता हूँ? कि बाबा बड़ा सहज समझाते हैं। मैं जानता हूँ कि सब भूल जाते हैं। यह सहज समझानी भी सब भूल जाते हैं। पता नहीं क्या-2 बताते हैं जो कोई की भी बुद्धि में बैठता ही नहीं और उसको ये भी कह देना है- ये तुम समझते हो कि बाप से हम वर्सा ले रहे हैं और बाबा कहते हैं- मुझे याद करते रहो तो तुम्हारा विकर्म भस्म हो जावेगा। 'वि' माने विपरीत, 'कर्म' माने कर्म, जो भी गीता-ज्ञान के विपरीत तुमने कर्म किए हैं, वो सब कर्म भस्म हो जावेंगे; क्योंकि गीता ज्ञान में ही भगवान ने कर्म-अकर्म-विकर्म की गति समझाई है, और तो कोई शास्त्र दुनिया का है ही नहीं जिसमें ये बातें समझाई गई हों। तो अभी ये बातें अच्छी तरह से समझते हो? पीछे क्या? अभी नहीं समझेंगे तो पीछे क्या होगा? क्या विचार है- पक्का वर्सा लेंगे? पक्के ब्रह्माकुमार बनेंगे? पक्के ब्रह्माकुमार माने? अव्वल नम्बर ब्रह्मा के कुमार बनेंगे या नम्बरवार ब्रह्मा के कुमार बनेंगे? परमब्रह्म के कुमार बनेंगे? भक्तिमार्ग में तो गाते रहते हैं। क्या गाते हैं? अरे! ब्रह्मा को भी नमन नहीं करना है, विष्णु को भी नमन नहीं करना है, शंकर को भी नमन नहीं करना है। ''गुरुः साक्षात् परमब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।'' जो परम ब्रह्म है, साक्षात् प्रैक्टिकल में, आँखों के सामने को साक्षात् कहा जाता है, उसको नमन करना है। तो ऐसे पक्के ब्रह्माकुमार बनेंगे कि एक से ही सुनेंगे और कोई से नहीं सुनेंगे? अरे, एक को पहचानेंगे तब सुनेंगे कि बिना पहचाने सुनेंगे? तो पहले क्या करना पड़े? एक को पहचानना पड़े। नहीं तो ऐसे अव्वल नम्बर कुरी के ब्राह्मण नहीं बनने से फिर तुम अव्वल नम्बर के सूर्यवंशी देवता कैसे बनेंगे? सूर्यवंशी देवता कहाँ बनेंगे? संगम में ही सूर्यवंशी बनते हैं! जो राधा-कृष्ण पहला पत्ता बनेंगे वो सूर्यवंशी नहीं होंगे? (किसी ने कहा- चंद्रवंशी) होंगे ना! वो चंद्रवंशी होंगे, ज्ञान-सूर्य के बच्चे नहीं बनेंगे? पहला पत्ता सृष्टि का? अरे, जो ज्ञान-सूर्य है, अभी ज्ञान दे रहा है, सुप्रीम टीचर के रूप में भले ज्ञान दे रहा है, तो पढ़ाई पढ़ाते समय उसकी मुख्य नज़र किसके ऊपर है? सारी पढ़ाई किसके लिए चल रही है? कृष्ण बच्चे के लिए। तो वो ही सूर्यवंशी नहीं बनेगा? (किसी ने कहा- बनेगा) तो बताया- ये कितना सहज समझाते हैं सेकेण्ड में। गाया हुआ है कि सेकेण्ड में जीवनमुक्ति यानी एक सेकेण्ड में समझा करके एक सेकेण्ड में जनक ने जीवनमुक्ति पाई। तो जीवनमुक्ति पाएँगे तो नई

राजधानी का संगठन होगा। उस ब्राह्मण सो देवता बनने वालों के संगठन में कोई विकारी पाँव नहीं रख सकेगा, संगदोष-अन्नदोष में आने वाला पाँव नहीं रख सकेगा। विनाश भी साथ-2 होता है और स्थापना के साथ, विनाश तो होता ही है; लेकिन राजधानी भी तैयार होती है। बाप तो कहते हैं- मैं जब आता हूँ तो एक सेकेण्ड में धक से राजधानी स्थापन कर देता हूँ। "यह तो एक ही धक्क से एकदम स्वर्ग बना देते हैं।" (मु.2.1.63 पृ.6 आदि) ऐसे नहीं, जो वर्तमान विजयमाला-रुद्रमाला के पुरुषार्थी हैं, लगातार नाक रगड़ते रहते हैं, राजधानी का संगठन, यूनिटी बनती ही नहीं। तो मेरे आने की निशानी क्या है? कब कहें- मैं आ गया? माँ के पेट में जब बीज पड़ता है तब बच्चा आ गया? वो बीज भ्रूण बनता है तब आ गया? वो भ्रूण बड़ा हो करके, बच्चा बन करके पैदा होता है तब कहा जाता है- बच्चा आया या पहले ही कहा जाता है- बच्चा पैदा हो गया? निशानी बताई, बच्चा पैदा होता है तो जो कान से घर में आवाज़ सुनेगा, बाप सुनेगा पहले, वो भी कहेगा; पड़ोसी आवाज़ सुनेगा 'ऊआँ-3', तो वो भी कहेगा- बच्चा आया। जो भी इन आँखों से देखेगा तो कहेगा बच्चा आया। ऐसे ही यहाँ भी बताया कि बाप का प्रत्यक्षता रूपी जन्म होता है तो ये निशानी है जो इन आँखों से देखे, वो तहेदिल से कहे-मेरा (सुप्रीम) बाप आ गया। सिर्फ़ ब्रह्माकुमार-कुमारियों का नहीं, जो अपन को प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारी कहते उनका भी नहीं, जो भी तहेदिल से एवरलास्टिंग कहें, फर्स्ट और आखिरी बार कहें कि मेरा बाप आ गया। नहीं तो ऐसा ब्राह्मण नहीं बनने से फिर तुम (पक्के सूर्यवंशी) देवता कैसे बनेंगे! कितना सहज-सेकेण्ड में समझाते हैं। जनक की एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति गाई हुई है। ओम शांति।

एक्यूरेट में किसका चित्र दिखाएँगे? एक्यूरेट छपाएँगे तो उस एक्यूरेट चित्र में पहले-2 किस चित्र का परिचय देंगे? (किसी ने कहा- ऊपर बाप का) हाँ! (किसी ने कहा-उसके बाद दो लक्ष्मी-नारायण) ऊपर जो लिंग बाप का चित्र देंगे, साकार में निराकार बाप का परिचय देंगे, उसको नाक-कान-आँख वाला नहीं दिखाएँगे तब हो गया एक्यूरेट। तुमने बहुत अच्छा समझा! तुमने आज की मुरली को पूरा हप कर लिया!

ॐ शांति

Contact Us
Address
A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085
Mobile - 9891370007, 9311161007
Email - a11spiritual1@gmail.com
Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM
Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV
@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv
Instagram - @adhyatmikvidyalaya
Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

– –

01.01.2025